

संरचनावाद (Structuralism) का विस्तृत अध्ययन

संरचनावाद मनोविज्ञान की सबसे प्रारंभिक विचारधाराओं में से एक है। यह मनोविज्ञान का पहला औपचारिक स्कूल था, जिसने यह समझने की कोशिश की कि हमारा मस्तिष्क कैसे कार्य करता है और हमारी चेतना कैसे गठित होती है। इसे **विल्हेम वुंट (Wilhelm Wundt)** और उनके शिष्य **एडवर्ड टिचनर (Edward Titchener)** ने विकसित किया। यह दृष्टिकोण मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में स्थापित करने की कोशिश करता है और मानसिक प्रक्रियाओं को उनकी सबसे बुनियादी इकाइयों में विभाजित करके अध्ययन करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी मानसिक अनुभव को उसकी सबसे छोटी इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है और इन इकाइयों को समझकर मानसिक प्रक्रियाओं की व्याख्या की जा सकती है।

1. संरचनावाद का विकास और इतिहास

(i) विल्हेम वुंट (Wilhelm Wundt) का योगदान

- विल्हेम वुंट को "आधुनिक मनोविज्ञान का जनक" (Father of Modern Psychology) कहा जाता है।
- उन्होंने 1879 में जर्मनी के लाइपज़िग विश्वविद्यालय (University of Leipzig) में पहला मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित किया।
- वुंट का मुख्य उद्देश्य मानसिक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक तरीकों से अध्ययन करना था।
- उन्होंने आत्मविश्लेषण (Introspection) नामक विधि विकसित की, जिसमें व्यक्ति को अपने विचारों, संवेदनाओं और भावनाओं को विस्तार से बताने के लिए कहा जाता था।

आत्मविश्लेषण (Introspection) विधि - संरचनावाद की सबसे महत्वपूर्ण विधि आत्मविश्लेषण (Introspection) थी। इसमें व्यक्ति से कहा जाता था कि वह अपने मानसिक अनुभवों का विस्तार से वर्णन करे।

आत्मविश्लेषण के चरण:

1. व्यक्ति को किसी वस्तु, ध्वनि, या गंध के संपर्क में लाया जाता था।
2. उसे अपनी आंतरिक संवेदनाओं, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं का वर्णन करने के लिए कहा जाता था।
3. परिणामों की तुलना करके मानसिक संरचना को समझने का प्रयास किया जाता था।

आत्मविश्लेषण की सीमाएँ:

यह एक व्यक्तिपरक (Subjective) विधि थी, जिसमें हर व्यक्ति का अनुभव अलग हो सकता था।

इसे वैज्ञानिक रूप से दोहराया नहीं जा सकता, जिससे इसकी विश्वसनीयता कम हो जाती है।

यह केवल चेतन अनुभवों को ही समझ सकता था, लेकिन अवचेतन (Unconscious) मन की प्रक्रिया को नहीं।



(ii) एडवर्ड टिचनर (Edward Titchener) का योगदान

वुंट के शिष्य एडवर्ड टिचनर ने अमेरिका में संरचनावाद को लोकप्रिय बनाया।

उन्होंने वुंट के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया और कहा कि मानसिक प्रक्रियाओं को तीन मूलभूत तत्वों में विभाजित किया जा सकता है:

1. संवेदी अनुभूतियाँ (Sensations) – देखने, सुनने, छूने आदि से संबंधित संवेदनाएँ।
2. भावनाएँ (Feelings) – जैसे सुख, दुख, भय, क्रोध आदि।
3. कल्पनाएँ (Images) – स्मृति से उत्पन्न दृश्य या मानसिक चित्र।

टिचनर ने आत्मविश्लेषण विधि का अधिक प्रयोग किया और चेतना (Consciousness) की संरचना को जानने का प्रयास किया।

2. संरचनावाद की मुख्य विचारधारा:

- मानसिक अनुभव की संरचना (Structure of Mind) – मानसिक प्रक्रियाओं को छोटे-छोटे घटकों में विभाजित किया जा सकता है।
- आत्मविश्लेषण (Introspection) – टिचनर ने मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए आत्मविश्लेषण (Introspection) विधि का उपयोग किया, जिसमें व्यक्ति को अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को विस्तार से व्यक्त करने के लिए कहा जाता था।
- संवेदी अनुभवों का वर्गीकरण (Classification of Sensory Experiences) – मनोवैज्ञानिक अनुभवों को संवेदनाएँ (Sensations), कल्पनाएँ (Images), और भावनाएँ (Feelings) नामक तीन घटकों में विभाजित किया गया।

3. संरचनावाद के प्रमुख योगदान

- मनोविज्ञान को स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- आत्मविश्लेषण विधि ने मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन की नई दिशा प्रदान की।
- प्रयोगात्मक विधियों (Experimental Methods) का विकास किया।
- मानव चेतना को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया।
- आधुनिक संज्ञानात्मक (Cognitive) मनोविज्ञान की नींव रखने में मदद की।



4. संरचनावाद की सीमाएँ

- आत्मविश्लेषण (Introspection) की अनिश्चितता – अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा दिए गए विवरण भिन्न हो सकते हैं, जिससे यह विधि अविश्वसनीय बन जाती है। इसके अलावा, यह केवल वयस्कों पर लागू होती थी, बच्चों और मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों पर नहीं।
- अवचेतन मन की अनदेखी – संरचनावाद केवल चेतन अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करता है और अवचेतन (Unconscious) मन को अनदेखा करता है।
- अनुप्रयोग की सीमाएँ – यह केवल प्रयोगशाला स्थितियों में काम करता है और वास्तविक जीवन की जटिल मानसिक प्रक्रियाओं की व्याख्या नहीं कर सकता।

5. अन्य विचारधाराओं से प्रतिस्पर्धा:

संरचनावाद की सीमाओं के कारण कई नई विचारधाराएँ उभरीं, जैसे:

1. कार्यात्मकवाद (Functionalism) – विलियम जेम्स (William James) ने कहा कि हमें मानसिक प्रक्रियाओं की संरचना से अधिक उनके कार्य (Functions) पर ध्यान देना चाहिए।
2. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) – मैक्स वर्थाइमर (Max Wertheimer) और उनके साथियों ने कहा कि मानसिक अनुभवों को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करने के बजाय उन्हें संपूर्ण (Whole) रूप में समझना चाहिए।
3. मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) – सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) ने अवचेतन (Unconscious Mind) की भूमिका को महत्वपूर्ण माना।

संरचनावाद मनोविज्ञान का पहला औपचारिक सिद्धांत था, जिसने मानसिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव रखी। हालांकि, इसकी सीमाओं के कारण इसे अन्य नए सिद्धांतों ने प्रतिस्थापित कर दिया, लेकिन यह आज भी मनोविज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में माना जाता है।

